चीन की क्रान्ति : 1911 ई.
(CHINESE REVOLUTION)

बॉक्सर विद्रोह के समय मंचू सरकार की नीतियों ने मंचू सरकार के अस्तित्व पर एक प्रश्न चिह्न खड़ा कर दिया था। जनता में घोर असन्तोष विद्यमान था। अतः मंचू प्रशासन के समक्ष केवल दो विकल्प थे। **प्रथम**, अपनी अक्षमता को स्वीकार करते हुए गद्दी छोड़ दे, और **द्वितीय** साम्राज्य को प्रशस्त कर प्रजा की स्थिति को सुधारने का प्रयत्न करे। इन दोनों विकल्पों में प्रथम से तो वंश का अस्तित्व ही खतरे में था, अतः राजमाता ने द्वितीय विकल्प का आश्रय लेते हुए स्थिति को संभालने का प्रयत्न किया। अतः राजमाता ने तुरन्त घोषित किया, ''**आज हमारे समक्ष सबसे बड़ी आवश्यकता साम्राज्य को शक्तिशाली बनाकर प्रजा के हित की है.....विदेशों में प्रचलित उत्तम प्रणालियों का प्रयोग कर हमें अपनी गलतियों से छुटकारा पाना चाहिए और पुरानी की गई त्रुटियों को बुद्धिमत्तापूर्वक स्वीकार करते हुए भविष्य का निर्माण करना चाहिए।**'' राजमाता द्वारा सुधारों का आश्रय

वास्तव में एक भुलावा था। यह चीनी जनता को संवैधानिक शासन की छाया दिखाकर मंचू प्रशासन के लिए समर्थन का एक ढकोसला ही था। वास्तव में, 20वीं शताब्दी में राजनीतिक चेतना की जो पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी थी, उसे एक ऐसी क्रान्ति को जन्म तो देना ही था, जो मंचू वंश का उन्मूलन कर चीन में गणतन्त्र की स्थापना कर देती।

क्रान्ति के कारण
(CAUSES OF THE REVOLUTION)

इस क्रान्ति के निम्नलिखित कारण थे :

(अ) विदेशी हस्तक्षेप—19वीं शताब्दी का प्रारम्भ चीन में पश्चिमी साम्राज्यवादी शक्तियों के प्रवेश के साथ जिस प्रकार सामने आया था, आगे चलकर चीन के लिए अत्यन्त अहितकारी सिद्ध हुआ। इंगलैण्ड, फ्रांस, जापान, अमेरिका एवं रूस ने चीन पर अपना-अपना प्रभुत्व स्थापित करने के प्रयत्न में चीन का शोषण प्रारम्भ कर दिया था। **चीन की 'ईश्वरीय साम्राज्य' की प्रतिष्ठा को इससे गहरा आघात पहुंचा।** उन्नीसवीं सदी के अन्त तक आते-आते चीन ने विश्व सभ्यता के केन्द्र होने के गौरव को खो दिया। इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि यूरोपीय शक्तियों ने चीन पर अपना प्रभाव बनाकर जो सन्धियां की थीं उनसे प्राप्त विशेषाधिकारों के कारण वे चीन पर हावी हो गये एवं बीसवीं सदी के प्रारम्भ तक चीन नाममात्र के लिए स्वतन्त्र देश रह गया। इस प्रकार चीन की अधोगति को होते देखकर यद्यपि राष्ट्रभक्तों ने विद्रोह भी किये थे, (जिनमें ताईपिंग एवं बॉक्सर विद्रोह उल्लेखनीय हैं), परन्तु इन विद्रोहों को कुचल दिया गया। इन विद्रोहों को विदेशी शक्तियों के हस्तक्षेप से ही कुचला गया था। **अतः विदेशी हस्तक्षेप से देश को बचाने के लिए मात्र क्रान्ति का सहारा रह गया था।**

(ब) मंचू प्रशासन के प्रति घृणा—चीन में मंचू प्रशासन 1644 ई. से चला आ रहा था। मंचू शासकों ने जिस प्रकार विदेशी शक्तियों का सहयोग लेकर विद्रोह को कुचला था, उससे आम धारणा बन गई कि विदेशी प्रभाव के लिए मंचू वंश पूर्ण उत्तरदायी है। देश में पड़ रहे अकालों एवं लूटमार से चीन की रक्षा करने में प्रशासन असफल रहा। अतः **'स्वर्गिक साम्राज्य'** को अधोगति तक पहुंचाने के लिए मंचू वंश को उत्तरदायी मानने वाली चीन की जनता मंचू वंश को ही उखाड़ देना चाहती थी। **लाट्रेट** ने ठीक ही लिखा है, **"अठारहवीं शताब्दी के अन्त से ही मंचू वंश का पतन हो चुका था तथा वह देश को गतिशील नेतृत्व प्रदान करने में असफल रहा था। उसकी अक्षमता तथा उसमें व्याप्त भ्रष्टाचार ने चीन को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया।"**[1]

(स) संसदीय शासन व्यवस्था की मांग की उपेक्षा—मंचू वंश के शासकों ने अपनी अलोकप्रियता को कम करने के उद्देश्य से चीन में सुधार कार्यक्रमों को लागू करने का प्रयत्न लिया। चीन में चल रहे सुधार आन्दोलनों की उग्रता ने प्रतिक्रियावादी शासिका त्जुशी को सुधार कार्यक्रम लागू करने पर विवश कर दिया। सैन्य व्यवस्था में सुधार किये गये। शिक्षा के क्षेत्र में 1905 में प्राचीन शिक्षा पद्धति का अन्त कर आधुनिक पद्धति लागू करने की आज्ञा जारी की गई। त्जुशी के उत्तराधिकारी राजकुमार फू-ची ने भी सुधार कार्यक्रमों को जारी रखते हुए प्रान्तों में विधान सभाओं की स्थापना की। 1910 **में चीन में पहली बार राष्ट्रीय सभा का गठन हुआ।** सुधारवादियों ने इन सुधारों से प्रोत्साहित होकर **संसदीय शासन और वैध राजसत्ता** की स्थापना की मांग करना प्रारम्भ कर दिया। शासक वर्ग ने समय के वेग को न समझकर संसदीय व्यवस्था की मांग को ठुकरा दिया। **अतः सुधारवादियों ने मंचू वंश को उखाड़ने का संकल्प ले लिया।** यदि शासक वर्ग ने समय के वेग को समझते हुए संसदीय शासन की स्थापना के लिए ठोस कदम उठाये होते तो सम्भवतः क्रान्ति न होती, परन्तु शासक की हठधर्मिता ने क्रान्ति का द्वार अनावृत कर दिया।

(द) जनसंख्या में वृद्धि एवं प्राकृतिक प्रकोप—20वीं शताब्दी के आरम्भ में चीन की जनसंख्या की वृद्धि में जिस प्रकार वृद्धि हुई, उस अनुपात में आधुनिक साधनों के अभाव में उत्पादन में वृद्धि नहीं हुई। जहां 1886 ई. से 1911 ई. तक जनसंख्या में 5 करोड़ की वृद्धि हो गई वहीं न तो योग्य नई भूमि कृषि हेतु तैयार की गई और न ही आधुनिक संसाधनों का प्रयोग कर उत्पादन की वृद्धि का प्रयत्न किया गया। **अतः**

[1] "The Manchu dynasty had been in decline since the close of the eighteenth century and

भुखमरी, भ्रष्टाचार, गरीबी एवं लूटमार को बल मिला, जिससे आर्थिक असन्तोष व्याप्त हो गया। इसी बीच आर्थिक असन्तोष की वृद्धि में प्राकृतिक प्रकोपों ने आग में घी का कार्य किया। 1910-11 ई. में चीन की नदियों में बाढ़ आ गई। पिछले 40 वर्षों में सबसे विकराल एवं भयंकर बाढ़ मध्य चीन में 1910-11 में आई जिससे अत्यधिक नुकसान पहुंचा। ब्राउन के शब्दों में, 1910-11 **ई. में मध्य प्रान्तों में उत्पादन की स्थितियां पिछले चालीस वर्षों में सबसे खराब हो गई थीं। पिछले पांच वर्षों में तीसरी बार लाखों लोगों को बेघर हो जाने में स्थिति को और अधिक गम्भीर बना दिया।''**[1]

मंचू प्रशासन इस गम्भीर आर्थिक संकट का सामना न कर सका। प्रशासन की संकट के समय उपेक्षापूर्ण नीति में चीन की जनता में व्याप्त असन्तोष को धधकती ज्वाला के रूप में, उग्र स्वरूप दे दिया।

(य) प्रवासी मजदूर वर्ग का प्रभाव—चीन की असन्तुलित आर्थिक स्थिति ने चीन के लोगों में विदेश पलायन की प्रवृत्ति को जन्म दिया। इस प्रकार के लोगों में चीन के बिना पढ़े-लिखे मजदूर वर्ग के लोग भी थे, जो कि आजीविका की खोज में विदेश चले गये थे, अमेरिका हवाई द्वीप फिलीपीन द्वीप समूह, मलय प्रायद्वीप, मलय राज्य संघ, सिंगापुर एवं कनाडा में इस वर्ग के चीनी लोग विद्यमान थे। **इस समय तक विदेशों में 25 लाख चीनी थे, जिसमें अमेरिका में 3 लाख एवं मलय राज्य संघ व सिंगापुर में 13 लाख चीनी थे।** इस प्रवासी बिना-पढ़े लिखे चीनी वर्ग ने चीन में अपने परिवारजनों को अर्जित धन भेजना प्रारम्भ कर दिया। इस वर्ग के लोग जब चीन आते तो अपने वर्ग में चीन की स्थिति की तुलना विदेशों से करते और विदेशों की उन्नत आर्थिक स्थिति का बखान करते थे। अतः इस मजदूर वर्ग के प्रवासी जनों ने आर्थिक रूप से अत्यन्त पिछड़े चीनी मजदूर वर्ग में क्रान्ति की भावना का विकास कर दिया।

(र) बौद्धिक जागरण—1905 ई. में चीन में प्राचीन परीक्षा पद्धति की समाप्ति एवं आधुनिक शिक्षा की महत्ता ने अनेक चीनी विद्यार्थियों को विदेशों में विद्याध्ययन के लिए प्रेरित किया। इधर ईसाई मिशनरियां भी प्रतिवर्ष अच्छे विद्यार्थियों को विद्याध्ययन के लिए विदेशों में भेजती थीं। वहां की शिक्षा, शासन पद्धति एवं रहन-सहन का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा था। उनको पश्चिमी सभ्यता के समानता, स्वतन्त्रता एवं बन्धुत्व के सिद्धान्तों ने प्रभावित किया। अतः इन विद्यार्थियों ने चीन की स्थिति का विदेशों की स्थिति से तुलनात्मक अध्ययन प्रारम्भ कर दिया। इस परिप्रेक्ष्य में 1898 ई. में जापान में **'ताओ दो बून काइ'** की स्थापना हुई। इसका मूल उद्देश्य चीन की समस्याओं का अध्ययन करना था।

छियांग छी-छाओ ने पश्चिमी सभ्यता का अध्ययन कर 1898 ई. 'छिंग ई-पाओ' तथा 1902 ई. 'शिन-मिन त्सुंगपाओ' नामक पत्रिकाएं प्रकाशित कीं। थांग त्साह छांग ने होनान में 'त्जु-ली-हुई' नामक संस्था की स्थापना की। **डॉ. सुनयात सेन ने 'तुंग मेंग हुई'** नामक जिस दल का गठन किया उस दल ने स्पष्ट रूप से घोषित किया कि **चीन में क्रान्ति आवश्यक है।''** लिन शू ने स्कॉट, वाल्जाक एवं डिकेंस के नामक विदेशी लेखकों की कृतियों का अनुवाद चीनी भाषा में किया। येन फू ने आन लिबर्टी, दि स्प्रिट ऑफ लॉज एवं इवोल्यूशन खण्ड इथिक्स को अनुवादित किया। 19वीं शताब्दी के अन्त तक चीन में समाचार पत्रों का प्रकाशन भी आरम्भ हो गया था। छापेखाने के सर्वप्रथम चीन में आविष्कार ने मुद्रण कार्य को द्रुतगति से बढ़ा दिया था।**इस प्रकार पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के आलोक में चीन में बौद्धिक जागरण का जो एक वेग प्रारम्भ हुआ, उसने चीन में क्रान्तिकारी बीज बोने में अहम भूमिका निभाई।**

(ल) डॉ. सुनयात सेन का नेतृत्व—चीन की क्रान्ति के जनक डॉ. सुनयात सेन ने चीन की क्रान्ति के लिए बौद्धिक एवं क्रान्तिकारी पृष्ठभूमि तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। डॉ. सेन ने चीन की दुर्दशा का मूल कारण मंचू वंश को मानकर क्रान्तिकारी संस्था **'हिसंग चुंग हुई'** (Hsing Chung Hui) की स्थापना की। 1905 ई. में इसी संस्था का पुनर्गठन कर **तुंग-मेंग हुई** (Tung-Meng Hui) नाम दिया गया। **डॉ. सेन के क्रान्तिकारी विचारों से प्रभावित होकर ही चीनी विद्यार्थियों ने उनका समर्थन किया था।** वास्तव में डॉ. सेन का व्यक्तित्व क्रान्तिकारी था।

विनाकी के शब्दों में, ''**सुनयात सेन का नेतृत्व इन क्रान्तिकारी संगठनों में उसके व्यक्तित्व पर आधारित था।**''[1] '**तुंग मेंग हुई**' नामक संस्था ने 'मिन-पाओ' से एक पत्र प्रकाशित करना प्रारम्भ किया। 1908 ई. तक इस पत्र की डेढ़ लाख प्रतियों का विक्रय होने लगा। वास्तव में, 1911 ई. क्रान्ति से पूर्व होने वाले 1906 एवं 1908 के विद्रोहों पर डॉ. सेन के विचारों की छाप स्पष्ट थी।

(**व**) **तात्कालिक कारण**—1909 ई. एवं 1911 ई. के मध्य केन्द्र द्वारा अपनाई गई रेलवे लाइनों के निर्माण की नीति एवं हॉकों की घटना क्रान्ति का तात्कालिक कारण बनी। वास्तव में, पीकिंग की केन्द्रीय सरकार ने रेलवे लाइनों के निर्माण हेतु विदेशी फर्मों के अनुबन्ध स्वीकार कर लिए थे और चीन के विभिन्न प्रान्तों में विदेशी फर्में रेलवे लाइनों का निर्माण कर रही थीं, परन्तु अनेक प्रान्तों में यह आवाज उठने लगी कि रेलवे लाइनों के निर्माण में चीन की पूंजी व्यय होनी चाहिए और इसका नियन्त्रण एवं संचालन प्रान्तीय आधार पर होना चाहिए। **इस विरोध ने केन्द्र व प्रान्तीय विरोध का रूप ले लिया।** 1905 ई. में इसी प्रश्न पर '**अधिकार वापस लो**' आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। वस्तुतः प्रान्तीय शासकों के विरोध का सबसे बड़ा कारण यह था कि केन्द्र विदेशी शक्तियों से ऋण लेकर यह कार्य करा रहा था जिससे विदेशी प्रभाव चीन में बढ़ रहा था। इस विरोध ने उस समय उग्र रूप धारण किया जब जचुआन प्रान्त में रेलवे लाइनों के निर्माण हेतु पूंजी का अधिकांश भाग प्रबन्धकों ने अन्य कार्यों में नष्ट कर दिया। अतः केन्द्रीय सरकार ने साझेदारों को रकम के 50 प्रतिशत से भी कम बॉण्ड देने का निर्णय लिया। साझेदारों के विरोध करने पर प्रदर्शन आरम्भ हो गए। अतः सरकार ने 1911 ई. में विद्रोहियों को गिरफ्तार कर लिया।

जब यह आन्दोलन अपने चरम विकास में था, उसी समय 10 अक्टूबर, 1911 ई. को **हांको की एक रूसी बस्ती** के एक घर में बम विस्फोट हो गया। यह घर क्रान्तिकारियों का बम बनाने का अड्डा था। रूसी बस्ती में बम फटने से रूसी अधिकारियों ने तुरन्त कार्यवाही कर मंचू सरकार का तख्ता पलटने का प्रयत्न करने वाले अनेक विद्रोहियों को गिरफ्तार कर चीनी वायसराय के अधीन कर दिया। इस पर सेना में स्थित क्रान्तिकारियों ने वायसराय के दफ्तर में आग लगा दी। चीनी सेनापति एवं वायसराय शहर से पलायन कर गए। कर्नल ली युआन हुंग के नेतृत्व में क्रान्तिकारियों ने वूचांग पर अधिकार कर लिया। 12 अक्टूबर, 1911 ई. को हांको पर अधिकार कर लिया गया और क्रान्तिकारियों ने एक कामचलाऊ सरकार की घोषणा की, जिसका अध्यक्ष ली युआन हुंग को बनाया गया। **इस सरकार ने एक प्रज्ञप्ति जारी कर चीन ने सभी प्रान्तों एवं नगरों से मंचू वंश की सत्ता को उखाड़ फेंकने की अपील की।** इस प्रकार सम्पूर्ण चीन में क्रान्ति का प्रारम्भ हो गया।

क्रान्ति की घटनाएं
(EVENTS OF THE REVOLUTION)

क्रान्ति की ज्वाला शीघ्र ही यांगत्सी तट के ऊपर, नीचे तथा दक्षिण की ओर फैलने लगी। शातुंग, चिहली एवं शैंसी ने भी मंचू सरकार के विरोध में विद्रोह में हिस्सा लेने की घोषणा कर दी। वूचांग स्थित क्रान्तिकारियों ने क्रान्तिकारी परिषद् की स्थापना के उद्देश्य से सभी स्वतन्त्र प्रान्तों को अपना-अपना प्रतिनिधि वूचांग भेजने के लिए अपील की। प्रतिनिधियों ने एक '**वचन पत्र**' तैयार किया। **यही वचन पत्र आगे चलकर प्रारम्भिक काम चलाऊ संविधान के रूप में नानकिंग में स्वीकृत हुआ।** शंघाई में शीघ्र ही एक सैनिक सरकार का गठन हो गया। इधर केन्द्रीय सरकार ने घबराकर विद्रोह का दमन करने के लिए युआन शिकाई को प्रधानमन्त्री बनाया, परन्तु युआन शिकाई अत्यन्त महत्वाकांक्षी व्यक्ति था उसने पूर्ण निष्ठा के साथ विद्रोह दमन का प्रयत्न नहीं किया। उसने शंघाई की क्रान्तिकारी सरकार से समझौते की वार्ता आरम्भ कर दी। पीकिंग में अपनी सरकार बना ली। पीकिंग में शाही राजमाता में ये परिवर्तन हो रहे थे कि 15 दिसम्बर, 1911 को शंघाई में प्रान्तों की क्रान्तिकारी सैन्य सरकारों का सम्मेलन बुलाया गया। इसमें चीनी गणतन्त्र की केन्द्रीय सरकार स्थापित करने की बात कही गई। 30 नवम्बर, 1911 को हांको में हुए सम्मेलन में युआन शिकाई को गणराज्य का राष्ट्रपति बनाने का निश्चय किया गया। 4 दिसम्बर को क्रान्तिकारी सेना ने नानकिंग पर अधिकार कर लिया।

---

[1] "Sun Yat-Sen's leadership in the revolutionary organizations was dominant.

इसी बीच 24 दिसम्बर, 1911 ई. को अमेरिका से डॉ. सुनयात सेन शंघाई पहुंचा। उसके शंघाई पहुंचते ही क्रान्तिकारियों ने डॉ. सेन को अपनी सरकार का अध्यक्ष बनाने का निर्णय लिया। इससे युआन शिकाई को राष्ट्रपति बनाये जाने का निश्चय समाप्त हो गया। **जनवरी 1912 में डॉ. सेन ने अध्यक्ष पद ग्रहण कर लिया।** इस स्थिति में पीकिंग की मंचू सरकार ने नानकिंग की युआन शिकाई की सरकार को कुचलने का प्रयत्न किया। इस पर डॉ. सेन ने निर्णय लेते हुए युआन शिकाई को तार द्वारा सूचित किया कि यदि वह गणतन्त्र को स्वीकार कर ले तो उसे राष्ट्रपति बना दिया जायेगा। युआन शिकाई की इस प्रस्ताव पर सहमति ने मंचू वंश को खतरे में डाल दिया। 12 **फरवरी, 1912 को सत्तारूढ़ मंचू राजवंश का अन्त कर दिया गया।** मंचू राजवंश के लिए एक राजप्रासाद छोड़ दिया गया। उसके लिए वार्षिक पेन्शन निर्धारित कर दी गई। **युआन शिकाई को चीनी गणराज्य का राष्ट्रपति नियुक्त कर दिया गया।**

क्रान्ति की असफलता के कारण

(CAUSES OF THE FAILURE OF THE REVOLUTION)

1944 ई. से सत्तारूढ़ मंचू राजवंश का अन्त एवं चीन में गणराज्य की स्थापना निःसन्देह एक महत्वपूर्ण घटना थी, परन्तु आगे चलकर युआन शिकाई ने जिस प्रतिक्रियावादी रुख को अपनाया उसे देखते हुए इस क्रान्ति को असफल माना जाता है।

संक्षेप में, इसकी असफलता के निम्नलिखित कारण थे :

(अ) युआन शिकाई का उत्तरदायित्व—चीन की क्रान्ति 1911 ई. की असफलता का सबसे बड़ा कारण युआन शिकाई का प्रतिक्रियावादी रुख था। यह ठीक है कि वह क्रान्ति के परिणामस्वरूप चीनी गणराज्य का राष्ट्रपति नियुक्त हुआ, परन्तु उसकी महत्वाकांक्षा ने उसे तानाशाह बनाने की ओर प्रेरित किया। मई 1914 ई. में उसने चीन के लिए जो संविधान बनाया उसमें केवल राजा नाम की कमी थी। वस्तुतः हर दृष्टि से अधिकार उसने अपने पद में सुरक्षित कर लिये थे, उसके सलाहकार फ्रेंक ने तो यहां तक कहना प्रारम्भ कर दिया था कि "**चीन में गणतन्त्र की अपेक्षा राजतन्त्रात्मक प्रथा अधिक उपयुक्त है। जिस देश में लोगों का बौद्धिक स्तर ऊंचा नहीं है वहां गणतन्त्रात्मक सरकार बेकार हो जाती है।**"[1] अतः युआन शिकाई ने दिसम्बर 1915 ई. में अपनी पिछलग्गू उन जनता के 1834 प्रतिनिधियों को बुलाकर अपना राज्याभिषेक तक की भूमिका बनाने का प्रयत्न किया था। यही नहीं, 19 फरवरी 1916 उसके राज्याभिषेक की तिथि भी निर्धारित कर दी गई थी, परन्तु विद्रोह होने से उसका यह राज्याभिषेक का स्वप्न पूरा न हो पाया।

इतना ही नहीं, उसने क्रान्ति के मूल उद्देश्य चीन को विदेशी प्रभाव से मुक्त रखने की नीति का भी परित्याग कर दिया। वह आजीवन विदेशियों के प्रभाव में रहा। अप्रैल 1912 ई. में उसने एक विज्ञप्ति में कहा, "**हमारे देश के लोगों को सच्चे रूप में विदेशियों के साथ सम्बन्ध कायम रखने चाहिए। मंचू प्रशासन के समय विदेशियों ने जितनी भी सन्धियां चीन से की हैं उन सन्धियों को उचित मानते हुए उन सन्धि शर्तों को हमें शीघ्र कार्यान्वित करना चाहिए।**"

अतः इन परिस्थितियों में चीन की क्रान्ति के मौलिक उद्देश्यों का हनन हो गया और क्रान्ति असफल रही।

(ब) राष्ट्रीयता की भावना का अभाव—चीन जैसे विशाल देश को कभी भी मंचू शासकों ने केन्द्रीकृत करने का प्रयत्न नहीं किया। मंचू प्रशासन के समय चीन अनेक प्रदेशों में विभक्त था और प्रत्येक प्रदेश में सामन्ती शासक प्रायः स्वतन्त्रतापूर्वक शासन करता था। प्रत्येक प्रदेश की शासन व्यवस्था अलग थी। अतः प्रान्तीय सामन्ती शासक सदा अपना स्वतन्त्र अस्तित्व बनाते हुए केन्द्रीय सरकार की उपेक्षा करते थे। इससे राष्ट्रीयता की भावना का विकास नहीं हो पाया। अतः राष्ट्रीयता की भावना के अभाव में क्रान्ति असफल हो गई।

(स) जनमानस का जाग्रत होना—चीन की अधिकांश जनता अशिक्षित थी तथा वह क्रान्ति या गणराज्य के अर्थ को समझने में असमर्थ थी। अतः चीन के नवोदित गणराज्य को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा।

(द) **आर्थिक स्थिति**—नई सरकार ने चीन की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए कोई विशेष कदम नहीं उठाया। चीन की जनता नई सरकार से सुदृढ़ आर्थिक स्थिति की अपेक्षा करती थी, परन्तु जब स्थिति में कोई अन्तर नहीं आया तो उनके लिए गणराज्य एवं मंचू प्रशासन में कोई विभेद समझ नहीं आया। चीन की गणतन्त्रीय सरकार के लिए भी यह असम्भव था कि इतनी जल्दी वह चीन की आर्थिक स्थिति को ठीक कर पाती, क्योंकि मंचू प्रशासन ने देश को आर्थिक रूप से बिल्कुल जर्जरित कर दिया था।

इस प्रकार स्पष्ट है कि चीन में क्रान्ति के पश्चात् आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया। **मंचू राजवंश का पतन तो अवश्य हो गया, परन्तु युआन शिकाई ने पुनः उन्हीं कदमों पर चलकर क्रान्ति को असफल कर दिया।** युआन शिकाई के कृत्यों ने डॉ. सुनयात सेन जैसे क्रान्तिकारी नेताओं के कान खड़े कर दिये गये और चीन में पुनः संघर्ष का दौर प्रारम्भ हो गया।